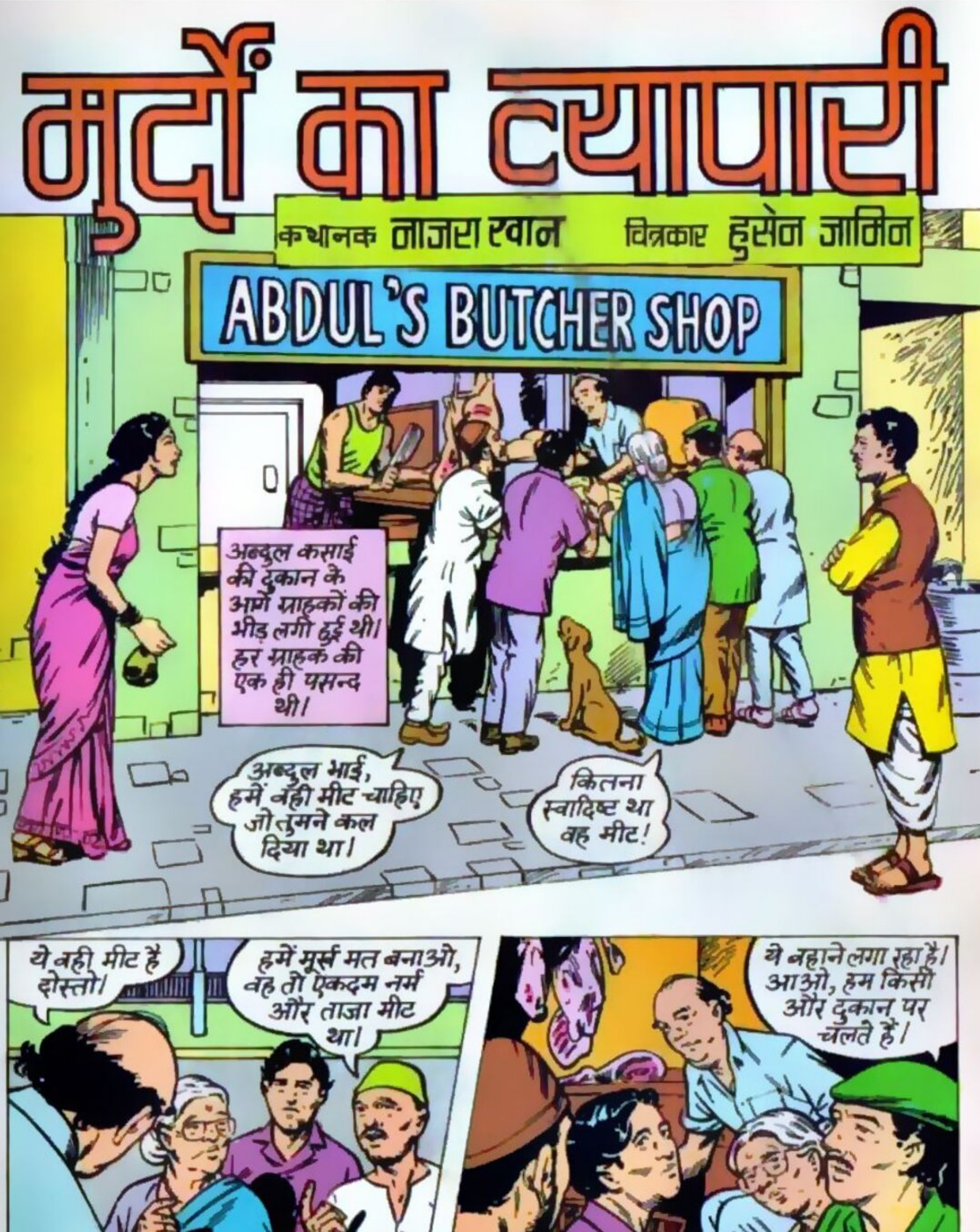

मनोज
कॉमिक्स
संख्या 892 मूल्य
मुर्दों का व्यापारी
इस
कॉमिक्स
के साथ एक
KADAM STUDIO
Tutu-Mohit


मुर्दों का व्यापारी
कथानक नाज़रा खान चित्रकार हुसेन जामिन
ABDUL'S BUTCHER SHOP
अब्दुल कसाई की दुकान के आगे ग्राहकों की भीड़ लगी हुई थी। हर ग्राहक की एक ही पसन्द थी।
अब्दुल भाई, हमें वही मीट चाहिए जो तुमने कल दिया था।
कितना स्वादिष्ट था वह मीट!
ये वही मीट है दोस्तो!
हमें मूर्ख मत बनाओ, वह तो एकदम नर्म और ताज़ा मीट था।
ये बहाने लगा रहा है। आओ, हम किसी और दुकान पर चलते हैं।

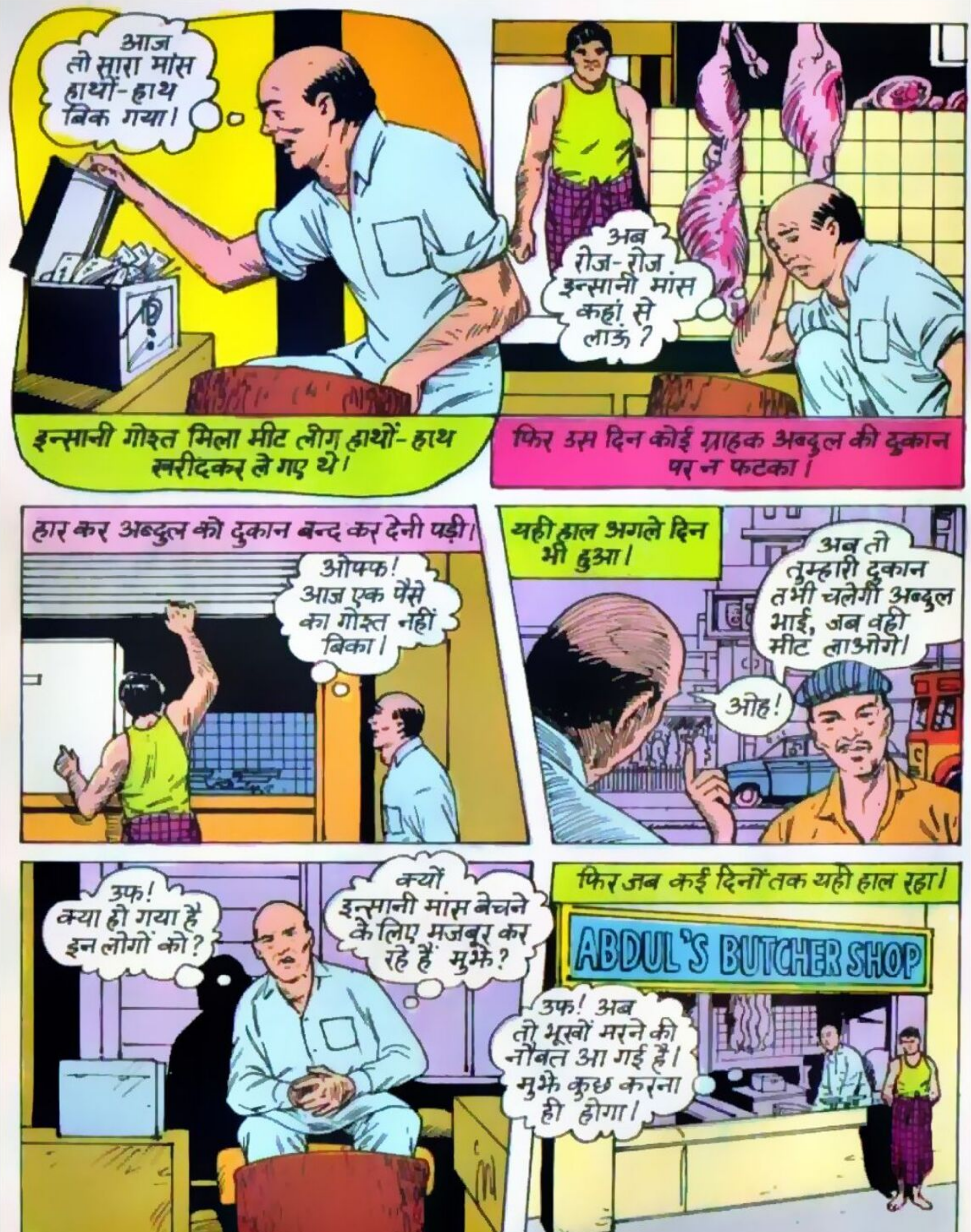

ग्राहक धीरे-धीरे अब्दुल की दुकान से छंटने लगे।
आओ चलें।
कोई और दुकान देखेंगे, जहां हमारी पसन्द का मीट मिलता हो।
उफ! सब चले गये।
अब इन्हें कैसे समझाऊं कि जो मीट कल बेचा था, वह किसी दुकान पर नहीं मिल सकता, क्योंकि वह किसी बकरे का नहीं...
!!!
...इन्सान का मीट था।
फिर परसों रात की घटना उसके मस्तिष्क में चलचित्र की भांति चलने लगी।
ओह! आज तो बहुत रात हो गई...
...जल्दी घर चलना चाहिए।


तभी–
हिलना मत!
ओह!
जो भी पास है चुपचाप मेरे हवाले कर दो, वरना पेट फाड़ दूंगा।
ओह! लुटेरा!
दे... देता हूं!
इसे सबक सिखाना होगा।
यह लो।
शाबाश!
रुपये लेने के चक्कर में जैसे ही वह थोड़ा असावधान हुआ।
यह भी ले।
आऽऽऽऽ
फिर अब्दुल रुका नहीं, पागलों की भान्ति वार करता रहा।


और जब वह रुका।
या खुदा! यह तो मर गया! यह मैंने क्या किया?
अगर किसी ने मुझे इस लाश के साथ देख लिया तो गजब हो जाएगा।
इसे ठिकाने लगाना होगा। लेकिन कहां?
अब्दुल सोच में डूब गया।
फिर जल्दी ही—
इसे दुकान के कोल्डरूम में छिपा देता हूं।
लाश को खींचकर अब्दुल अपनी दुकान में ले आया।
!!!
गूंगा लाश देख बुरी तरह हैरान था।
अब्दुल ने उसे जल्दी-जल्दी सारी बात बताई।
आ, अब इसे अंदर कोल्डरूम में ले जाने में मेरी मदद कर।
लेकिन समस्या अभी भी अब्दुल के सामने मुंह बाये खड़ी थी।
यहां पर भी लाश को मैं कब तक छिपा सकता हूं!



तभी अब्दुल के दिमाग में एक और विचार आया।
हां, यही ठीक रहेगा। इसी तरह मुझे इस मुसीबत से छुटकारा मिल सकता है।
गूंगे, इस लाश के टुकड़े करके बाकी गोश्त में मिला दे।
इसे भी बाकी गोश्त के साथ बेच डालेंगे।
अब्दुल का हुक्म गूंगे के लिए खुदाई हुक्म था और—
खच्च
खच्च
और इस तरह अगले दिन अब्दुल ने इन्सानी मांस को बकरे के मांस में मिलाकर बेच डाला।
मनोज स्टोर्स
CHIC LAUNDRY

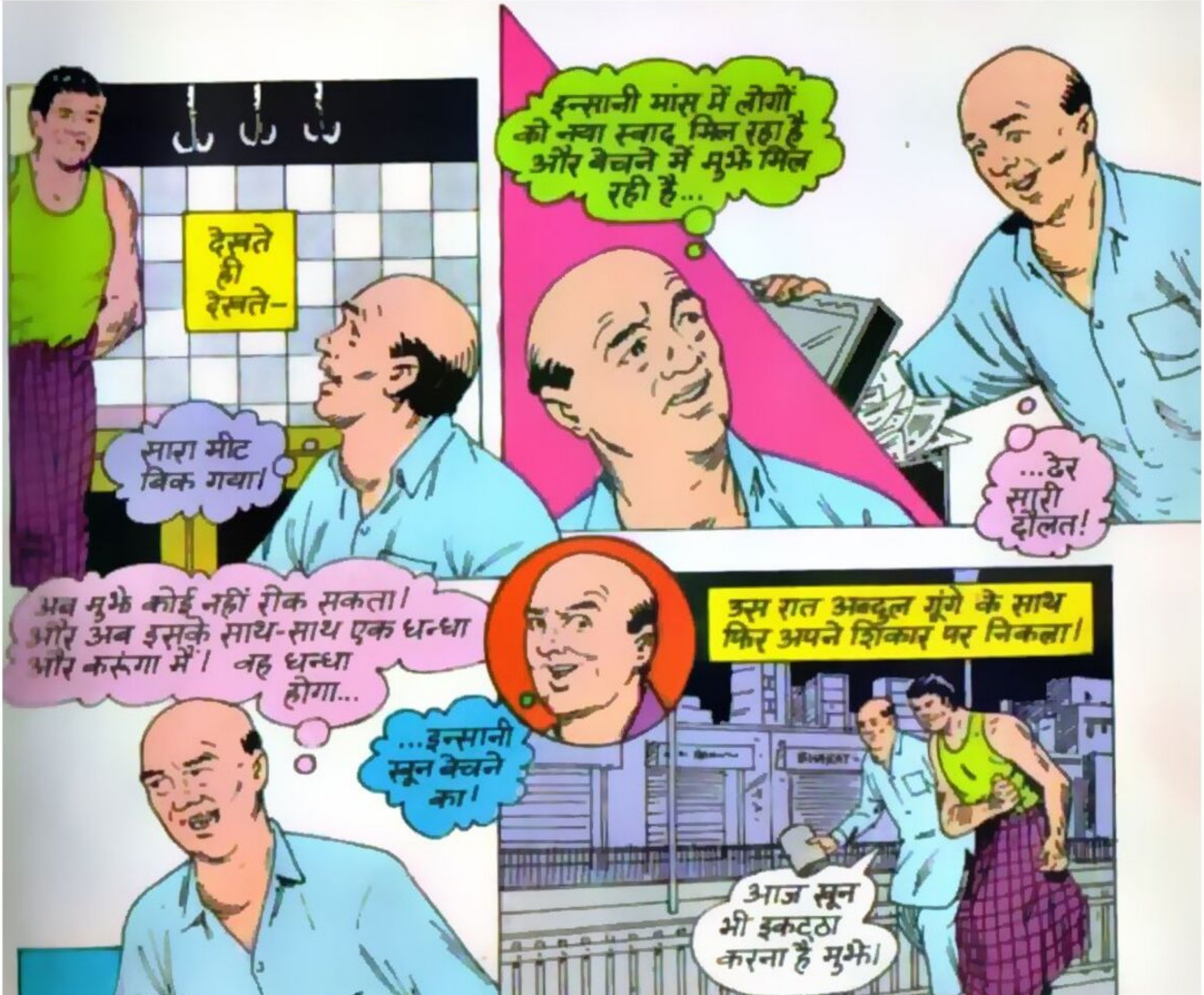

आज तो सारा मांस हाथों-हाथ बिक गया।
इन्सानी गोश्त मिला मीट लोग हाथों-हाथ खरीदकर ले गए थे।
अब रोज-रोज इन्सानी मांस कहां से लाऊं?
फिर उस दिन कोई ग्राहक अब्दुल की दुकान पर न फटका।
हार कर अब्दुल को दुकान बन्द कर देनी पड़ी।
ओफ्फ! आज एक पैसे का गोश्त नहीं बिका।
यही हाल अगले दिन भी हुआ।
अब तो तुम्हारी दुकान तभी चलेगी अब्दुल भाई, जब वही मीट लाओगे।
ओह!
उफ! क्या हो गया है इन लोगों को?
क्यों इन्सानी मांस बेचने के लिए मजबूर कर रहे हैं मुझे?
फिर जब कई दिनों तक यही हाल रहा।
ABDUL'S BUTCHER SHOP
उफ! अब तो भूखों मरने की नौबत आ गई है। मुझे कुछ करना ही होगा।


उसी रात–
कड़...
कड़...कड़...
फिस्स्स
ओह! लगता है टायर पंक्चर हो गया है।
चर्र... चर्र...
क्या हुआ रामू, कार क्यों रोक दी?
पंक्चर हो गया है साहब।


ओह! अब क्या होगा ? कार में तो स्टेपनी भी नहीं है।
साहब, लगता है अब रात यहीं गुजारनी होगी।
कड़...कड़...
ओह! ऐसे मौसम में रात घर से बाहर गुजारनी पड़ेगी।
मजबूरी है डार्लिंग!
अचानक वह चौंक पड़ी—
ओह!
क्या हुआ मोना?
तभी—
छनाक
आऽऽ
आऽऽ
खच्च
खच्च


हे भगवान!
कड़...कड़...
उसे रोको! वह बचना नहीं चाहिए!
दूसरे ही क्षण–
खच्च
आऽऽऽ
कड़ कड़...


ड्राइवर की चीख बिजली के कड़कने की आवाज में दबकर रह गई थी।
कड़...कड़...
अआऽऽ
तीनों लाशों को उठाकर ले चलो।
अगले दिन–
ये वही मीट है भाइयो, जिसकी आपको तलाश थी।
सच कह रहे हो?
फिर जल्दी ही लोगों की भीड़ अब्दुल की दुकान पर टूट पड़ी।
एक किलो मुझे दो।
मुझे दो किलो दो।
आज तो मैं पूरा दस किलो मीट लेकर जाऊंगा।



देखते ही देखते-
सारा मीट बिक गया।
इन्सानी मांस में लोगों को नया स्वाद मिल रहा है और बेचने में मुझे मिल रही है...
...ढेर सारी दौलत!
अब मुझे कोई नहीं रोक सकता। और अब इसके साथ-साथ एक धन्धा और करूंगा मैं। वह धन्धा होगा...
...इन्सानी खून बेचने का।
उस रात अब्दुल गूंगे के साथ फिर अपने शिकार पर निकला।
आज खून भी इकट्ठा करना है मुझे।
और-
खच्च
आह!
नहीं! मैं तेरा खून नीचे नहीं गिरने दूंगा।


ये सून मुझे लखपति बनायेगा।
उस रात गूंगे और अब्दुल का कहर कई बेगुनाहों पर बरसा।
सच्च
सच्च
आह!
सच्च
आह!
आह!
पुलिस परेशान हो चुकी थी।
दो दिनों में बीस आदमियों के गायब होने की कम्पलेण्ट आ चुकी है... और हैरत की बात यह है कि गायब होने वाले अधिकतर व्यक्तियों का सम्बन्ध एक परटिक्यूलर ऐरिये से है।
इस रहस्य का जल्द से जल्द पता करो इंस्पेक्टर विकास, वरना लोगों का पुलिस से विश्वास उठ जाएगा।
मैं पूरी कोशिश करूंगा सर!
पुलिस इस रहस्य को खोजने में जुट गई थी।


जबकि उसी रात–
ये आज रात अपना पहला शिकार है गूंगे, बचना नहीं चाहिए!
सांय
जैसे ही वह युवक मोड़ पर पहुंचा...
ओह!
नहींऽऽऽऽ
फिर वह युवक संभल पाता, उससे पहले ही–
खच्च
आह!
तभी–
पीयोंऽऽऽ पीयोंऽऽऽ
ओह! पुलिस सायरन!
!!!
दूसरे ही क्षण–
पुलिस आ गई गूंगे, भागो!


अपने मालिक का आदेश पाते ही गूंगा अपने शिकार को छोड़कर भाग खड़ा हुआ।
आऽऽ
कुछ ही पलों बाद–
अरे! वह सड़क के बीचोबीच कौन पड़ा है?
गाड़ी रोको हवलदार, उसे शायद मदद की जरूरत है।
तुरन्त ही–
जीप से उतरने के बाद–
ओ माई गॉड! इसका यह हाल किसने किया?
शायद इसकी हत्या की गई है।


तभी–
ये अभी ज़िन्दा है सर!
आह!
इसे तुरन्त अस्पताल पहुंचाने का प्रबन्ध करो।
ओ. के. सर!
तुरन्त ही–
फिर पुलिस हैडक्वार्टर में–
उस व्यक्ति की हत्या का प्रयास उसी क्षेत्र में किया गया है सर, जहां से कई व्यक्तियों के रहस्यमयी ढंग से गायब होने की रिपोर्ट मिली है।
कहीं उस क्षेत्र के लोगों के गायब होने में उसी हत्यारे का ही हाथ तो नहीं।
उस व्यक्ति के होश में आते ही उसका बयान लो, उसने हत्यारे को ज़रूर देखा होगा... और उस क्षेत्र में पुलिस गश्त बढ़ा दो, हत्यारा जल्दी पकड़ में आना चाहिए।
ओ. के. सर!


हत्यारे की तलाश के लिए अस्पताल पहुंचकर उस व्यक्ति का बयान लेना होगा।
अस्पताल में-
मुझे सिर्फ इतना याद है कि वह लम्बी-चौड़ी मौत अचानक मेरे सामने आ खड़ी हुई...
...फिर इससे पहले कि मैं चीख पाता, मेरा यह हाल हो गया।
ओह!
उसका हुलिया कैसा था?
लंबा कद, भयानक चेहरा और हाथ में लम्बी तलवार। बस इतना ही याद है मुझे।
इतना तो बहुत है उसकी तलाश के लिए!
अब नहीं बचेगा वह मेरे हाथ से। पाताल से भी खोदकर कूद निकालूंगा उसे।
उसी रात पुलिस पूरी तरह सजग हो चुकी थी।


अगर आज वह घर से बाहर निकला तो बचेगा नहीं।
इधर पास ही–
दस खून की बोतलें, बीस आंखें, दो गुर्दे, पांच दिल।
बस इतना ही? तुम तो कहते थे तुम हमें थोक में माल सप्लाई करेगा।
थोक में भी मिलेगा मैक सेठ! हम धीरे-धीरे अपना काम बढ़ा रहे हैं।
ठीक है, अभी हम ये लेकर जाता है, लेकिन अगली बार अपुन तभी आयेगा, जब पूरा माल मिलेगा।
ठ... ठीक है।
ये लो अपना पेमेण्ट।
फिर मैक ने सारा सामान अपने बैग में रखा और वहां से रवाना हो गया।
उसके जाने के बाद–
अपने शिकारों की संख्या बढ़ा दो गूंगे, तभी हम पर दौलत की बारिश हो सकती है।


आज मुझे हर हाल में दस शिकार चाहिए गूंगे ...
...जाओ!
अपने मालिक का आदेश पाकर निकल पड़ा गूंगा सड़कों पर...
...शिकार की तलाश में।
आह!
खच्च
आह!
गूंगा के शिकार।
खच्च
बहुत सारे शिकार चाहिए मुझे...
... और वे मुझे यहीं मिल सकते हैं।
यह सोचकर गूंगे ने...


...निकट के एक मकान का दरवाज़ा तोड़ डाला।
भड़ाक
अरे!
क... क... कौन हो तुम?
?!
सवाल दागा था युवक ने...
...मगर जवाब मिला तलवार से।
नहींऽऽऽ
खच्च
आह!
नहींऽऽऽ!
फिर वह बच्चे और स्त्री की तरफ पलटा।
मम्मी!
स्त्री हलक फाड़ कर चीख उठी—
बचाओऽऽ



संयोग से इंस्पेक्टर विकास गश्त करता उधर ही आ निकला था।
बचाओऽऽऽ
किसी के चीखने की आवाज!
चर्र चर्र
बचाओऽऽऽ
उधर कोई संकट में है।
पलक झपकते ही–
ओ नो!
खच्च
नहीं–नहीं, मुझे मत मारो अंकल! मुझे मत मारो।
ओह! ये तो बच्चे को भी मार डालेगा। इसे रोकना होगा।


दूसरे ही क्षण—
तलवार फेंक दो, वरना गोली मार दूंगा!
बहुत हत्याएं कर चुका तू, अब फांसी का फंदा तेरे गले में होगा।
इंस्पेक्टर गूंगा को भयभीत समझ उसे गिरफ्तार करने आगे बढ़ा...
...और यही बहुत बड़ी भूल कर गया वह।
धाड़
ओफ्फ!
धड़ाक
धड़ाम
आह!

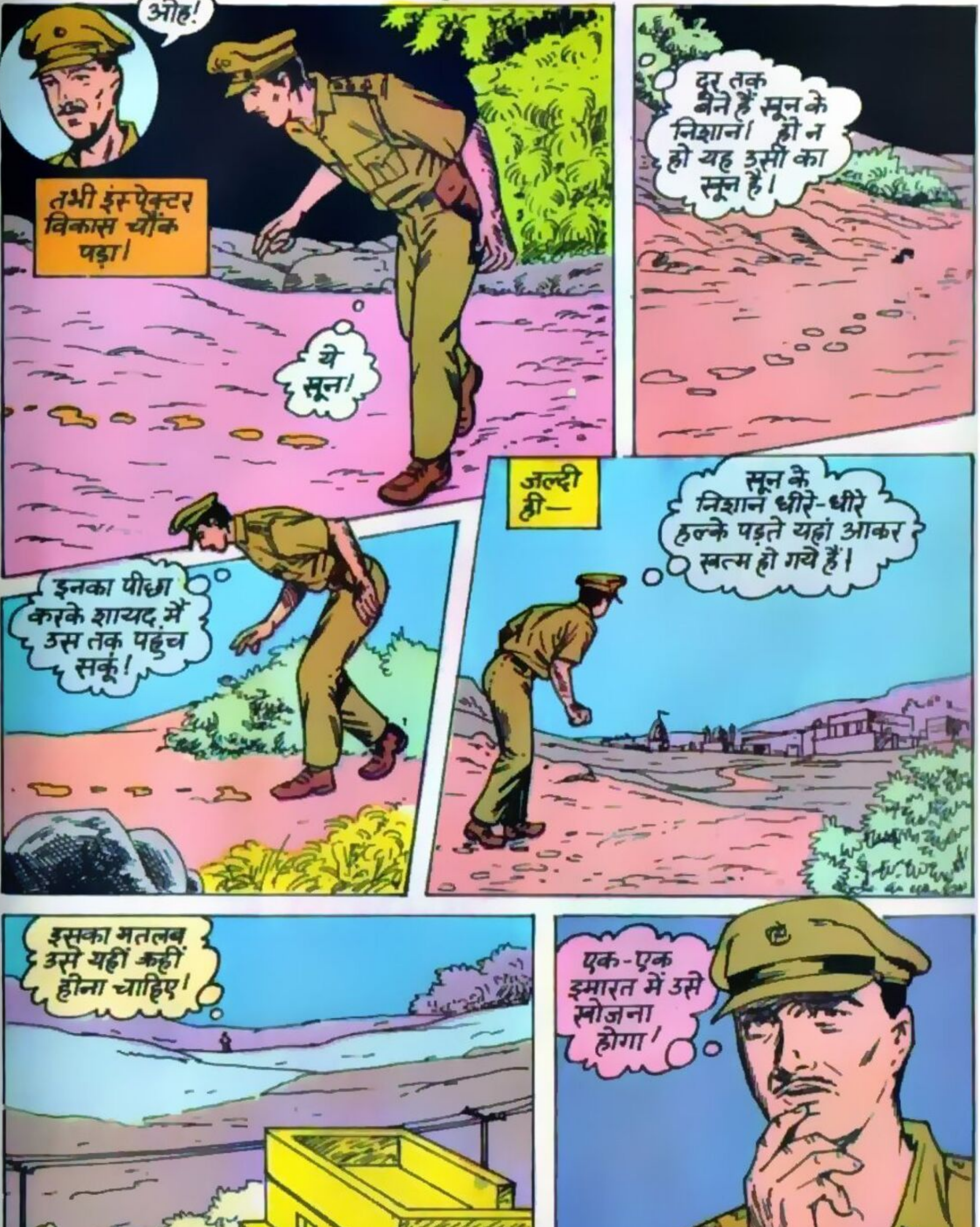

और फिर इंस्पेक्टर विकास के संभलने से पहले ही—
ओह!
सांय
खन्न
सांय
उफ! तलवार का एक ही वार मेरी जीवन लीला समाप्त कर देगा।
सांय
खच्च
ओह!


फिर तुरन्त ही–
जबकि गूंगा–
उफ!
वह तेजी से जीप में सवार हुआ और–
उं ऽऽऽऽऽ
उधर इंस्पेक्टर विकास जब तक अलमारी के नीचे से निकलकर बाहर आया, तब तक बहुत देर हो चुकी थी।
उफ! मेरी जीप लेकर भाग गया। तुरन्त ही हैडक्वार्टर को सूचना देनी होगी।


इंस्पेक्टर तुरन्त ही पास वाले घर के अन्दर पहुंचा और–
यस सर, वो मेरी जीप लेकर भागा है। शायद मिन्टो क्रॉसिंग रोड की तरफ गया है।
तुरन्त ही–
पुलिस जीप मिन्टो क्रॉसिंग पर
तुम्हारी बाईक जल्द ही तुम्हें वापस मिल जाएगी।
मुझे भी उसके पीछे जाना होगा।
उधर मिन्टो क्रॉसिंग रोड पर–
वह रहा, तेज चलो।
और तेज, वह निकलना नहीं चाहिए।
दांत पर दांत जमाये ड्राईविंग कर रहा था गूंगा।


रॉकेट की-सी रफ्तार से भाग रही थी गूंगे की जीप—
ज़ूम
धांय
बड़ाम
तेज भागती जीप को संभाल न सका गूंगा—
धड़ाम


बड़ाम
उफ! जीप के परखचे उड़ गये।
वह जिन्दा नहीं बचा होगा।
आओ देखें।
नीचे पहुंचते ही सभी हैरान रह गये—
अरे! यहां तो कोई भी नहीं है?
कमाल है! इतने भयंकर हादसे से भी बचकर निकल भागा।
तभी इंस्पेक्टर विकास भी वहां आ पहुंचा।
क्या हुआ?
वह बचकर निकल गया सर।


ओह!
तभी इंस्पेक्टर विकास चौंक पड़ा।
ये खून!
दूर तक बने हैं खून के निशान। हो न हो यह उसी का खून है।
इनका पीछा करके शायद मैं उस तक पहुंच सकूं!
जल्दी ही—
खून के निशान धीरे-धीरे हल्के पड़ते यहां आकर खत्म हो गये हैं।
इसका मतलब उसे यहीं कहीं होना चाहिए!
एक-एक इमारत में उसे खोजना होगा!


जबकि पास ही की एक इमारत में–
ताड़
आज फिर नाकामयाब लौटे हो तुम...
...निकम्मे हो चुके हो तुम!
इधर इंस्पेक्टर विकास–
इस इमारत के अंदर से कुछ ऐसी हल्की सी बदबू आ रही है, जैसे मांस सड़ रहा हो।
इसे भी चैक करके देखता हूं!
यहां से फौरन निकलने की तैयारी करो गूंगे। पुलिस किसी भी समय तुम्हें तलाशती यहां पहुंच सकती है।


इस कमरे से आवाज! जरूर वह हत्यारा यहीं है।
इंस्पेक्टर के कंधे की एक तेज टक्कर दरवाजे पर पड़ी...
धड़ाक
...और दरवाजा टूट गया।
अगले पल —
ओह!
कहीं जाने की जरूरत नहीं है तुम्हें। पुलिस यहां आ पहुंची है।
डोण्ट मूव गूंगे, वरना भेजा फोड़ दूंगा!
एक बार धोखा दे चुका है तू मुझे, अब मैं दोबारा झांसे में नहीं आऊंगा!
छनाक
आह!


अगले ही क्षण हलक फाड़कर चीखा अब्दुल –
गूंगे ! खत्म कर डाल इसे!
सांय
तुरन्त ही बिजली की भान्ति चमकने लगी गूंगे की तलवार।
उफ!
हा... हा... हा... गूंगे से अब तू बच नहीं सकता।
सांय
ओफ! अब तो इससे बचने का एक ही तरीका है।
हा... हा... हा...
मेरा तरीका सफल हो जाये तो बात है।
अगले ही पल–
सांय


और–
खच्च
आऽऽऽ!
अपने मालिक की मौत देख गूंगा पागल हो उठा। अगले पल वह चीते की भान्ति झपटा इंस्पेक्टर पर।
न... न... न...
लेकिन इंस्पेक्टर अपने बचाव का तरीका सोच चुका था।
ये मांस काम आयेगा मेरे!
धड़ाक
और जैसे ही गूंगा पास पहुंचा–
छनाक
अब गूंगा निहत्था हो चुका था, लेकिन फिर भी...
न... न...
...मौत बन चुका था वह इंस्पेक्टर के लिए।
उफ़! ये तो मेरा गला दबा रहा है।
जल-बिन मछली की भान्ति तड़पने लगा इंस्पेक्टर।
उफ़! सांस घुट रही है। दम निकलता महसूस हो रहा है। अब मौत से नहीं बच सकूंगा मैं।
तभी जीवन की हल्की-सी किरण के रूप में इंस्पेक्टर के हाथ लगी...
...सून की बोतल!


छनाक
जीवन बचाने का आखिरी प्रयास किया इंस्पेक्टर ने।
उफ! इस पर तो रत्ती भर असर नहीं हुआ इसको।
तुरन्त ही–
खच्च
न...
न...
न...
अब कोई भी पल गंवाना मूर्खता थी।
धड़ाक
रबड़ के बबुए की भान्ति उछलकर खड़ा हो गया इंस्पेक्टर। जमाने भर का क्रोध उतर आया था उसके चेहरे पर।
ऐसे दरिन्दों को समाज में जीने का कोई हक नहीं है।
अगले ही क्षण वह पागलों की भान्ति टूट पड़ा गूंगे पर।
खचाक
कुछ ही पलों में इंस्पेक्टर उन दो दरिन्दों की लाशों के पास खड़ा था,जो...
...इंसानों को इंसानों का मांस खिला रहे थे।
समाप्त